Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 3, Issue 2 – 2020
ISSN: 2582-1377

शैक्षिक उपलब्धि

डॉ॰ अभिषेख कुमार पाण्डेय[1]

[1]सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, किंग्वे टेक्निकल इस्टीट्यूट (बी॰एड॰ कालेज), कुल्हरिया कैमूर बिहार।

"शिक्षा को सम्पूर्ण बनाने के लिए मानवीय होना चाहिए। इसमें केवल न तो बुद्धि का प्रशिक्षण बल्कि हृदय की स्वच्छता और आत्मा का अनुशासन भी सम्मिलित होना चाहिए।"

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

हमारा भारत एक विकासशील देश हैं, जो 21वीं शताब्दी के लिए एक ऐसी शिक्षा नीति तैयार करने के लिये तत्पर है; जोकि रुढ़िवादी समाज को एक अति आधुनिक, प्रगतिशील एवं संपन्न समाज में परिवर्तन करने में मुख्य भूमिका निभायेगा। आज हमारा देश विकसित एवं शिक्षित समाज का निर्माण करने के लिये अच्छे माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की आवश्यकता है। इन माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले सभी विद्यार्थियों के जीवन में सफलता, सम्मान और पहचान प्राप्त करने के लिए शिक्षित होना पड़ेगा। यह तभी सम्भव होगा जब वह व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करेगा। शिक्षा समाज को एक पीढ़ी से दुसरे पीढ़ी में निरंतर ज्ञान के हस्तांतरण के माध्यम से विद्यालयी समाज, गृह समाज और राष्ट्र समाज के हित में उनके समाजीकरण का निर्माण करती है। यह परम्परा समाज में सामाजिक संस्कृति को बनाये रखने में मदद करती हैं। विद्यार्थी जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व मनुष्य के शरीर, मन, एवं आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण विकास करना है (राजकुमार, 2016 पृ. 35)।

शिक्षा द्वारा कीर्ति का प्रकाश हमारे चारो ओर विस्तारित करना है। यहाँ हमारे सभी शैक्षिक समस्याओं को सुलझाने में, जीवन को सुसंस्कृत बनाये रखने में, अनौपचारिक रूप से शिक्षा अपनी अहम भूमिका निभाती रहती है। यह अपने लौकिक ज्ञान के द्वारा सदैव मार्गदर्शन का काम करती है। अर्थात जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से एक कमल का पुष्प खिल कर अपनी सुन्दरता को पुरे वातावरण में बिखेरता है। और अस्त होने पर अपने पुरवा की अवस्था में विराजमान हो जाता है, ठीक उसी तरह शिक्षा के द्वारा एक अबोध बालक भी कमल के फूल की भाँति खिल उठ पड़ता है। ये शिक्षा के अभाव में दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है। अर्थात शिक्षा वह मार्गदर्शन है, जिसके द्वारा बालक का शारीरिक, मानसिक,

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

नैतिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक भाषायी विकास होता है। इससे वह समाज का सभ्य, उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्रवान नागरिक बनकर राष्ट्र के उन्नति में अपनी शक्ति का परीक्षण करता है(राजकुमार, 2016 पृ. 37)।

विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। बालक के विकास में अंगों के साथ-साथ शारीरिक, सामाजिक, सांवेगिक अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तन भी सम्मिलित होते हैं। अतः बालक के व्यक्तित्व का विकास करने के लिये व्यक्तित्व के समस्त पहलूः- रूचि, आदतें, आकांक्षाए, स्वधारणा, समायोजन आदि का सकारात्मक विकास आवश्यक है। एक बालक के निर्माण में उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित कारक प्रभावकारी बिन्दुओं के रूप में उपस्थित होते है। अलग-अलग सामाजिक तथा आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, स्वभाव, मानसिकता आदि में स्पष्टतः भिन्नता उपस्थित रहती है। इन्हीं विभिन्नताओं के फलस्वरूप वह दबाव, नैराश्य, कुण्ठा आदि अनुभव करने लगता है और कुसमायोजित हो जाता है। अधिकांश उच्च आय वर्ग के बालक विद्यालय स्तर पर अध्ययन करते समय विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में अध्ययन करने हेतु विचार करने लगते है तथा अपनी रूचि के व्यवसाय में प्रविष्ट होने का प्रयास करते है, जबकि दूसरी ओर निम्न आय वर्ग से सम्बन्धित बालक जल्द ही नौकरी प्राप्त करना चाहते है तथा उनका परिवार भी आय से अधिक अर्थ अर्जित करने का विचार करते है। वे यह भी विचार करते हो कि किसी भी प्रकार की गम्भीर दुर्घटना के बिना किसी कार्य में पारंगत हो जायें तथा नौकरी प्राप्त कर ले। साधारणतः निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के समूह के बालक अपने शहर या कस्बे को नया व्यवसाय प्राप्त करने के लिये छोड़ना पसन्द नहीं करते हो। इसके पीछे मूल कारण है परिवार की स्थिति एवं उस बालक की प्राप्त शिक्षा व उस शिक्षा की अहमियत। अच्छे परिवार के अर्थात सामाजिक-आर्थिक स्तर से युक्त परिवार के बालकों में अच्छी आदतें एवं परम्पराएँ स्वतः ही उत्पन्न होने लगती है। वे व्यवहार कुशल, सद्भावनापूर्ण, उच्च शैक्षिक उपलब्धि के धनी, सहकारिता, सुसमायोजन की भावनाओं से परिपूर्ण होते है। लेकिन यदि परिवार की परिस्थिति इसके विपरीत हों तो उनमें अनेक दोष, जैसे- कुसमायोजन, दुश्चिंता, बुरी आदतों का आविर्भाव, आत्मसंबोध में कमी, निर्णय लेने में असमर्थता आदि उत्पन्न होने लगते हो। इसका सीधा प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है,

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

जिससे बालक अपने मुख्य पथ से हटकर अलग ही राह का राहगीर बन जाता है (झाझडिया, 2015 पृ. 36)।

ड़ॉ.एस राधाकृष्णन (2010), पृ. 112 के शब्दों में शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं हैं; और यह न ही विचारों की समर्थन स्थली हैं, और न ही नागरिकता की पाठशाला हैं। यह विद्यार्थी के अध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की दीक्षा हैं। सत्य की खोज में लगी मानव आत्मा का प्रशिक्षण करती हैं। इस प्रकार शिक्षा मानव के सर्वांगींण विकास का आधार देती हैं। अतः शिक्षा मानव में मानवता का विकास का साधन हैं। जिससें मनुष्य की पशुवत को दूर कर सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं के अनुरुप परिष्कृत कर सामंजस्य बैठाया जा सकता हैं। यही शिक्षा समाज की प्रेरणा हैं और उसकी उर्जा हैं। इसी आधार पर राष्ट्र का भविष्य उसकें द्वारा प्राप्त किए गए शैक्षिक स्तर पर निर्भर करता हैं (डी.एन. 2010-11 पेज संख्या 122-134)।

शैक्षिक स्तर से तात्पर्य हैं कि हमारे शिक्षा संस्थानों में क्या और कैसे पढ़ाया जा रहा हैं। माध्यमिक शिक्षा संस्थानां में तो स्थिति और भी अधिक भयावह हैं। वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का भी इस क्षेंत्र से मोहभंग होता प्रतीत होता हैं कि जिसके परिणामस्वरूप हम अपव्यय व अवरोधन की स्थिति से जूझ रहें हैं। इसके कई कारण विद्यमान हैं। जैसे पाठ्यचर्या का अरूचिकर व एक मार्गीय होना छात्रों को स्वयं करके सीखने के अवसर कम उपलब्ध होना। इसके साथ ही माध्यमिक शिक्षा संस्थानां मे शिक्षकों का अभाव परिणाम स्वरूप माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर बहुत से विद्यार्थियों को असफलता प्राप्त होती हैं। देश के विभिन्न राज्यों में माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि और विफलता का घटनाक्रम सम्पूर्ण देश के शिक्षाविदों, शिक्षा निर्देशन प्रदाताओं एवं परामर्शदाताओं तथा शैक्षिक नियोजनकर्ताओं के लिए गंभीर चिंता का कारण बना हुआ हैं। यह शाश्वत् सत्य हैं कि जिस देश में जिस प्रकार के शिक्षकां का निर्माण होता हैं वह शिक्षक भी उसी तरह के समाज का निर्माण करते हैं(विपिन, विजय, निधि, 2012-13, पेज संख्या, 269-288)।

(सुनील, 2006, पृ. 6) माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़े यह दर्शातें हैं कि इस स्तर पर विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं। परीक्षा में असफलता जन्मजात योग्यता के आधार पर नहीं होती हैं न ही बुद्वि की न्यूनता इसके लिए

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

पूर्ण उत्तरदायी हैं। कभी कभी यह भी देखा गया हैं कि अधिक तेजस्वी छात्रों की शैक्षिक प्रगति का स्तर गिर जाता हैं। जबकि कुछ औसत छात्र अपने विद्यालय के कार्य को सुचारू रूप से करने में सफल हो जातें हैं। आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा, अस्तिववादी जीवन, अव्यापकता, नास्तिकता, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण, अतीत में अविश्वास एवं स्वंय में अनास्था के कारकों से हमारे पुराने मूल्य परिवर्तित होते जा रहें हैं। चार्ल्स स्कीनर- शैक्षिक कार्य का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि हैं जो विद्यार्थियों के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करता हैं। श्विल्सन एच.एफ (1976) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण एवं उसकी उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके माता-पिता की उनके शैक्षिक कार्यों में रूचि से जुड़ी हुई हैं। विद्यालय में बालक ने कितना ज्ञान प्राप्त किया हैं इसका पता शैक्षिक उपलब्धि द्वारा ही लगाया जा सकता हैं। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा अधिगम किये गये एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन हैं। बालकों के नैतिकता, सामाजिक मूल्यों में गिरावट का प्रभाव शिक्षा में देखने को मिलता हैं। जिसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती हैं। बालकों को प्रत्येक क्षेंत्र में प्रतिस्पर्धा व तनावपूर्ण परिस्थिति का सामना करना पड़ता हैं। इसमें सफलता हेतु आवश्यक हैं कि वह अपने व्यवहार को शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निर्मित करें। अतः विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि व उसमें सम्बन्धित चरों का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

शैक्षिक उपलब्धि के संन्दर्भ में रेखा (1966) द्वारा किए गए शोधकार्य में निष्कर्ष रूप में पाया गया की परिवार के सदस्यों द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पथ प्रदर्शन विद्यार्थियों के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करता हैं। कुमुद (2004) ने अभिप्रेरणा के उच्च स्तर को शैक्षिक उपलब्धि के लिए महत्वपूर्ण माना हैं। जबकि लिंग व परिवेश का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं। विद्यार्थियों के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कारक हैं जो शिक्षा, समाज, परिवार आदि ऐसें अनेक क्षेत्रों से जुड़ी हुई जो भिन्न भिन्न रूप में परिलक्षित होती हैं।

उपलब्धि से तात्पर्य किसी भी क्षेत्र में अर्जित ज्ञान से नहीं हैं। सामान्यतः हम उपलब्धि को शैक्षिक क्षेत्र में ही देखते हैं। लेकिन यह जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित होती हैं। अतः उपलब्धि का तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में विभिन्न विषयों में प्राप्त अंको से नहीं

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

अर्थात् उपलब्धि विद्यालय में बालक के अध्ययन विषय के अर्जित ज्ञान से हैं। उपलब्धि परीक्षण स्कूल से विषय सम्बन्धी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। इस परीक्षण से शिक्षक यह ज्ञात कर सकता है कि विद्यार्थी ने कितनी उन्नति की है, विद्यार्थी ने किस सीमा तक विषय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया है। उपलब्धि परीक्षण के अर्थ और भाव को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा परिभाषायें दी गयी है, जिनमें से कतिपय परिभाषायें इस प्रकार है।

इबेल- ''उपलब्धि परीक्षण वह है, जो छात्र द्वारा ग्रहण किए हुए ज्ञान का अथवा किसी कौशल में निपुणता का मापन करता है।''

गैरीसन तथा अन्य- ''उपलब्धि परीक्षा, बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करती हैं।''

फ्रीमैन- ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है।

सुपर- ''एक ज्ञानार्जन परीक्षण यह जानने के लिए प्रयुक्त किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी अच्छी प्रकार से कर सकता है।''

थार्नडाइक और हेगन- ''जब हम सम्प्राप्ति परीक्षण को प्रयोग करते है, तब हम इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर लेने के उपरान्त व्यक्ति ने क्या सीख है?''

प्रेसी, रॉबिनस और होरोक- ''सम्प्राप्ति परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रुप से छात्रों के सीखने स्वरुप और सीमा का मापन करने के लिए किया जाता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि - उपलब्धि वे हैं, जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।''

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 3, Issue 2 – 2020
ISSN: 2582-1377

उपलब्धि परीक्षण का महत्व

शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षणों को एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इनका प्रयोग अनेक कार्यों के लिए किया जाता है। थार्नडाइक और हेगन ने स्कूल की दृष्टि से उपलब्धि परीक्षण के महत्व का प्रतिपादन इन शब्दों में किया है-

(क). **विद्यार्थियों का वर्गीकरणः** उपलब्धि परीक्षणों से विद्यार्थियों को जो अंक प्राप्त होते हैं, उससे उनके मानसिक और बौद्धिक स्तर का ज्ञान हो सकता है। इसलिए उनके मानसिक स्तर के अनुसार, उनका वर्गीकरण किया जा सकता है।

(ख). **विद्यार्थियों की कठिनाइयों का निदानः** इन परीक्षाओं के द्वारा विद्यार्थियों की कठिनाइयों का पता चल जाता है। कठिनाई जान लेने पर उसके निवारण के उपाय किए जा सकते हैं। इस दृष्टि से विद्यार्थियों की प्रगति में योगदान किया जा सकता है।

(ग). **विद्यार्थियों को प्रेरणाः** अनुभव से पता चलता है कि विद्यार्थियों को प्रेरणा देने में भी, इन परीक्षाओं को सफलता मिली है। जब विद्यार्थियों को इस बात का पता चलता है कि उनके अर्जित ज्ञान की जाँच हो रही है, तो उन्हें प्रेरणा मिलती है।

(ध). **व्यक्तिगत सहायताः** उपलब्धि परीक्षणों के द्वारा सरलता से मन्द-बुद्धि कुशाग्र-बुद्धि, तथा विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों को पता लगाकर, उनकी आवश्यकताओं के अनुसार उनकी सहायता की जा सकती है।

(ड़). **शिक्षा-निर्देशनः** इस परीक्षण के आधार पर विद्यार्थियों ने जो अंक प्राप्त किए हैं तथा उनके पूर्व के और अभी के अंक को देखकर उन्हें समुचित निर्देशन दिया जा सकता है कि उन्हें कौन से विषय लेने चाहिए? आदि।

(च). **विद्यार्थियों को परामर्शः** उपलब्धि परीक्षाओं से हमें पता चलता है कि विद्यार्थियों की रुचियाँ क्या हैं? उनकी अभियोग्यताएं और कार्य-क्षमताएं क्या हैं? इसके आधार पर उन्हें आगामी अध्ययन के लिए परामर्श दिया जा सकता है।

उपलब्धि परीक्षण के प्रकार

उपलब्धि परीक्षण जो निर्देशन एवं परामर्श दक्षता को मापने हेतु बनायी जाते हैं। दो प्रकार की होती है। वे परीक्षण जो किसी व्यवसायगत दक्षता को मापने हेतु बनायी जाती हैं। इस प्रकार की परीक्षणो को 'व्यवसाय परीक्षण' कहते हैं। वे उपलब्धि परीक्षण जो विद्यालय के

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

पाठ्यक्रम में किसी एक विषय के अर्जित ज्ञान को मापने हेतु बनायी जाती हैं। शैक्षिक परीक्षा के माध्यम से यह देखा जाता है कि एक व्यक्ति शैक्षणिक प्रशिक्षण के फलस्वरुप कितनी दक्षता प्राप्त की हैं, शिक्षण की दक्षता के सम्बन्ध में उसका अनुभव कितना है तथा व्यवसाय के लिए वर्तमान में क्या कर सकता हैं, जबकि दूसरे प्रकार की परीक्षण विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषय के सम्बन्ध में बताती है कि एक विषय में विद्यार्थीं ने कितना सीखा है।

उपलब्धि परीक्षण का निर्माण

किसी भी लक्ष्य की पूर्ति हेतु संस्था या व्यक्ति प्रत्येक स्तर पर योजना बनाता है। विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु परीक्षण का निर्माण किया जाता हैं, जिसके अन्तर्गत विभिन्न पक्षों के मापन हेतु प्रश्नों को समुचित स्थान देने हेतु योजना तैयार की जाती है। शिक्षक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन तथा मूल्यांकन के लिए समय पर अनेक प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग करते हैं। परीक्षण निर्माण के आधार पर इन्हें दो भागों मे बांटा जा सकता है।

क्र.सं	**अप्रमाणीकृत परीक्षण**	**प्रमाणीकृत परीक्षण**
1.	प्रमाणीकृत परीक्षण यह औपचारिक हैं।	अप्रमाणीकृत परीक्षण यह अनौपचारिक है।
2.	अधिक विश्वसनीय एवं वैध है।	कम विश्वसनीय तथा वैध है।
3.	यह एक समय साध्य कार्य है।	यह कुछ प्रश्नों की रचना करके बनाया जाता है।
4.	प्राप्तांकों की व्याख्या बड़े समूह मे की जा सकती है।	प्राप्तांकों की व्याख्या छोटे समूह में की जा सकती है।
5.	अधिक समय तक तथा बड़े समूह की आवश्यकता की पूर्ति करता है।	तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति करता है।
6.	कुछ विशेषज्ञों की समिति द्वारा किया जाता है।	प्रायः कक्षा शिक्षक द्वारा किया जाता है

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

संदर्भ सूची

1. अस्थाना, विपिन, श्रीवास्तव, विजय एवं अस्थाना. निधि (2012-13), रिसर्च मेथोडोलोजी. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. कपिल, एच0के0 (2008), साख्यिकी के मूल तत्व. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।
3. कपिल, एच0के0 (2009), सांख्यिकीय के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।
4. कुरैशी, अंजुम नासिर (2009), मनोवैज्ञानिक मापनियाँ. आगराः राखी प्रकाशन।
5. गुप्ता, एस०पी० एवं गुप्ता, अलका (2009), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
6. गैरेट, एच०ई० (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी. दशम् संस्करण, बी०एफ० एण्ड संस बाम्बे।
7. गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अलका (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
8. त्रिपाठी, लाल बच्चन (2003), आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान. आगराः एच०पी० शर्गव बुक हाउस।
9. पाठक, पी०डी० (2018). बाल्यवस्था एवं बड़ा होना, आगराः श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
10. पाण्डेय, बी0बी0 एवं सिंह, राजेश कुमार (2006), शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन तथा प्रारम्भिक सांख्यिकी. गोरखपुरः वसुन्धरा प्रकाशन।
11. मिश्रा महेन्द्र कुमार (2009). मापन एवं मूल्यांकन, नई दिल्लीः अर्जुन हाऊस, नई दिल्ली पब्लिशिंग।
12. राय, पी० एन० (2007), अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
13. रुहेला, सत्यपाल (2012), भारतीय शिक्षा का समाजशाष्त्र. राजेस्थानः हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
14. लाल, रमन बिहारी (2009-10), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त. मेरठः रस्तोगी प्रकाशन, 250002, सत्रहवाँ।
15. मेहरा, वंदना (2009). रिसर्च मेथोलाजी, नई दिल्लीः ओमेगो पब्लिकेशन।
16. शर्मा, आर०के० एवं अन्य (2005), भारत में शैक्षिक व्यवस्था का विकास. आगराः राधा प्रकाशन मन्दिर।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

17.शर्मा आर0ए0 (2007), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में प्रारम्भिक साख्यिकीय. आर0 नाथ बुक डिपों, मेरठ।

18.शर्मा, जी.एल (2015), सामाजिक मुद्दे. नई दिल्लीः रावत पब्लिकेशन।

19.सुलैमान, मुहम्मद (2007), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. वाराणसीः मोतीलाल बनारसी दास।

20.सिंह, अरुण कुमार, (2011, 12, 13), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।

21.सिंह, गया (2014), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. आगराः आर०लाल० बुक डिपो।

22.सिंह, अरूण कुमार, (2009), शिक्षा मनोविज्ञान. पटनाः भारती भवन।

23.श्रीवास्तव, डी०एन० (2010-11), सांख्यिकी एवं मापन. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।

24.वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी०एन० (2011, 12), आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।

25.सक्सेना, आर०स्वरुप (2014), शिक्षा सिद्वांत. मेरठः आर० लाल बुक डिपो।

26.सारस्वत, मालती एवं गौतम एस०एस० (2014), भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामायिक समस्यायें. इलाहाबादः अलोक प्रकाशन।

27.हरलाक, ई०वी० (1979), डेवलपमेन्टल साइकोलाजी. नई दिल्लीः टी०एम०एवं० पब्लिकेशन।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.